Bhajan

17

भगवान के सच्चे भक्तों को

भगवान के सच्चे भक्तों को पग पग पे सहारा मिलता है,
इस ओर बचो उस ओर चलो यह आप इशारा मिलता है॥

तूफान हो लहरों में हलचल, पल पल डूबेंगे यह भय हो,
मन कल-कल में बेकल होवे, निर्बल जन निज पर संशय हो,
पर 'राम नाम' पर निश्चय हो, तो सहज किनारा मिलता है ॥
भगवान के सच्चे भक्तों को . . .

न हाथ में जग की माया हो, ना साथ में संगी साथी हो,
जन जन ही दुश्मन बन जाये, न हिम्मत बंधने पाती हो,
तब राम कृपा से ही जन को, संतोष उभारा मिलता है ॥
भगवान के सच्चे भक्तों को . . .

दु:ख हो सिर बिपता भारी हो, और सभी तरह लाचारी हो,
मन चिंतित, संशित हो जाये, निर्दोष जो नित-नित हारी हो,
जब सब द्वारों पर नां होवे, तब हरि का द्वारा मिलता है ॥
भगवान के सच्चे भक्तों को . . .

<u>मन लागो मेरो यार फकीरी में</u>

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥

जो सुख पायो नाम-भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में ॥
मन लागो मेरो यार . . .

भला-बुरा सबका सुन सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी में,
प्रेमनगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ॥
मन लागो मेरो यार . . .

हाथ में कूँड़ी बगल में सोटा, चारो दिसा जागीरी में.
आखिर ये तन खाक मिलेगा, कहां फिरत मगरूरी में ॥
मन लागो मेरो यार . . .

कहत कबीर सुनो भई साधो, साहिब मिले सबूरी में,
जो सुख पायो नाम-भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में ॥
मन लागो मेरो यार . . .

मैं तो तेरा दास प्रभु

मैं तो तेरा दास प्रभु, मुझको भुलाया कैसे,
दीनबन्धु दीनानाथ, नाम धराया कैसे ॥

द्रौपदी की लाज सभा के, बीच लगे जब लेने,
खेंच खेंच हार गये, चीर बढ़ाया कैसे ॥
मैं तो तेरा दास प्रभु . . .

बांध प्रह्लाद को जब, थंभसे चाबुक मारा,
बन के नरसिन्ह दैत्य मार गिराया कैसे ॥
मैं तो तेरा दास प्रभु . . .

गज को जल बीच जभी, ग्राह ने आकर पकड़ा,
ब्रह्मानंद करके दया, बंध छुड़ाया कैसे ॥
मैं तो तेरा दास प्रभु . . .

सिया राम तुम्हारो चरणों में

सिया राम तुम्हारे चरणों में, यदि प्यार किसी को हो जाये,
दो चारों की तो बात ही क्या, संसार उसी का हो जाये ॥

प्रह्लाद तो छोटा बालक था, पर प्यार किया परमेश्वर से,
संसार का होकर क्या लेना, एक बार प्रभु का हो जाये ॥
सिया राम तुम्हारे चरणों में . . .

रावण ने प्रभु से बैर किया, अब तक भी जलाया जाता है,
बन भक्त विभीषण शरण पड़ा, घर बार उसी का हो जाये ॥
सिया राम तुम्हारे चरणों में . . .

शबरी ने कहां पर वेद पढ़े, गणिका कब यज्ञ कराती थी,
जिस में छल द्वेष का लेश नहीं, भगवान उसी का हो जाये ॥
सिया राम तुम्हारे चरणों में . . .

माया के दीवानों शिक्षा लो, ये प्रेम दीवानी मीरा से,
जो प्यार करे श्री मोहन को, बेड़ा पार उसी का हो जाये ॥
सिया राम तुम्हारे चरणों में . . .

प्रभु तेरी महिमा किस विध गाऊँ

प्रभु तेरी महिमा किस विध गाऊँ,
तेरो अंत कहीं नहीं पाऊँ ॥

अलख निरंजन रूप तिहारो, किस विधि ध्यान लगाऊँ,
वृक्ष बगीचे रचना तेरी, किस विधि पुष्प चढ़ाऊँ ॥
प्रभु तेरी महिमा . . .

पांच भूत की देहना तुम्हरी, चन्दन किम लिपटाऊँ,
सकल जगत के पालन कर्ता, किस विधि भोग लगाऊँ ॥
प्रभु तेरी महिमा . . .

हाथ जोड़कर अरज करूँ मैं, बार बार शीश नवाऊँ,
ब्रह्मानंद हटा दे पर्दा, घट घट दर्शन पाऊँ ॥
प्रभु तेरी महिमा . . .

<u>रे मन हरि सुमिरन दिन रात</u>

सिमरन में सुख बसे, सिमरन में हरि आप,
वहां नामी निवास है, जहां नाम का जाप ॥

रे मन हरि सुमिरन दिन रात ॥

उन बिन नाहीं पार उतरियो, क्यूं न हरि गुण गात ॥
रे मन हरि सुमिरन ...

चारों पहर निन्दिया में बीते, जाग हुवा पछतात ॥
रे मन हरि सुमिरन ...

ये दुनिया है रैन बसेरा, जो आवत सो जाग ॥
रे मन हरि सुमिरन ...

कहत कबीर सुनो भई साधो, गुरु संग हरि मिल जात ॥
रे मन हरि सुमिरन ...

<u>श्री राम शरण में तेरी</u>

श्री राम शरण में तेरी, तुम राखो लाज हमारी ॥

तू ही बिगड़े काम बनाये, सबकी नैया पार लगाए,
दु:ख हर्ता सुख दाता है तू, जाने सब संसारी ॥
श्री राम शरण में तेरी . . .

जब से नाम लिया है तेरा, शीतल मन हो गया है मेरा,
खुशियों से भर दी है तूने, खाली झोली मेरी ॥
श्री राम शरण में तेरी . . .

आया हूँ मैं तेरे द्वारे, तोड़ के बन्धन जग के सारे,
तेरे चरणों की रज पालूं मैं, यही अभिलाषा मेरी ॥
श्री राम शरण में तेरी . . .

दो शब्दों के नाम ने तेरे, मन में शक्ति भर दी मेरे,
दु:ख भी सुख बन गये हैं मेरे, महिमा कैसी तेरी ॥
श्री राम शरण में तेरी . . .

सुन लीजिये बिनती हमारी

सुन लीजिये बिनती हमारी, हम आये शरण तुम्हारी ॥

जग के कष्टों ने घेरा, बस एक सहारा तेरा,
मैं पुकारू तुझे, तु बचा ले मुझे, बस बिनती यही है हमारी ॥
सुन लीजिये बिनती हमारी . .

दुखियों के तुम हो सहारो, तुम बिन अब किसे पुकारें,
कोई सुनता नहीं, कोई अपना नही, ये कष्ट पड़ा है भारी ॥
सुन लीजिये बिनती हमारी . .

तेरे द्वारे जो भी आता, चरणों में शीश झुकाता,
सबकी सुनता है तू, झोली भरता है तू, तेरी लीला है जग से न्यारी ॥
सुन लीजिये बिनती हमारी . .